



### **DR. ISHWAR CHANDER VERMA**

Dr. Ishwar Chander Verma is currently Senior Consultant at the Institute of Medical Genetics / Genomics at Sir Ganga Ram Hospital in Delhi. He has played a stellar role in establishing medical genetic services in India.

2. Born on 25 December, 1936, Dr. Verma obtained MBBS at Amritsar Medical College, MRCP from London, and DCH from Glasgow University. He received Genetic training in Switzerland, UK and USA. He joined AIIMS, Delhi as a Lecturer in 1967, and was appointed Professor of Paediatrics in 1988. The Genetic unit he set up was recognized as WHO Collaborating Center in Genetics, the only one in Asia. He set up the first Genetic center in India – at AIIMS, Delhi in 1968, the first registry for genetic disorders, and was the first to provide advanced genetic tests at low cost using indigenous methods. After retirement set up a state of the art genetic center in SGRH in 1997, where he retired as Director in 2018.

3. Dr. Verma has been involved for 20 years in investigating the health problems of tribal communities -in Andaman and Nicobar Islands (Onges, a Negrito tribal community), Muria Gonds of Bastar district, Kondhs of Udyagiri in Orissa, and Paniyans and other communities in Kerala. He provided genetic counseling to thousands of patients and established prenatal diagnostic for prevention of genetic disease. He has used Next Gen sequencing technologies for diagnosis and discovery of new genes. He was instrumental in starting a number of patient societies - for thalassemia, mental retardation, muscular dystrophy etc.

4. Dr. Verma has established the burden of genetic disorders in India, which provide reliable baseline data for planning services. He was the main geneticist in the study that show the increased frequency of Down syndrome in the low dose radiation from monazite in Kerala. He has 445 research publications to his credit. He has been editor-in-chief of Indian Journal of Pediatrics from 1993 to 2018, which has the highest among all medical journals in India.

5. Dr. Verma has been an adviser on several Committees of Government of India. He played an important role in developing the rare diseases policy by the Government. He has been an adviser to WHO Geneva and SEARO for 20 years. He has fellowship of NAMS, RCP (London), AAP and APRS (USA). He has served as president of Indian Society of Human Genetic, Indian Academy of Paediatrics Delhi, Society of Fetal Medicine and Indian Society of IEMs. He has made immense contributions to improve the health of patients with genetic diseases in India, and for training of physicians and scientists in medical genetics to establish the infrastructure for medical genetic services in the country.

6. Dr. Verma has received numerous awards. He received the BC Roy - MCI National award. He has also received awards from ICMR, NAMS, Ranbaxy Science Foundation, Guru Nanak University; and Life time achievement awards from AIIMS, ND, Cloud Nine Group of hospitals, and Scigenome Foundation.



## डॉ. ईश्वर चंद्र वर्मा

डॉ. ईश्वर चंद्र वर्मा, वर्तमान में दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल के मेडिकल जेनेटिक्स / जीनोमिक्स संस्थान में वरिष्ठ सलाहकार हैं। उन्होंने भारत में मेडिकल जेनेटिक सेवाओं की स्थापना में एक अहम भूमिका निभाई है।

2. 25 दिसंबर, 1936 को जन्मे, डॉ. वर्मा ने अमृतसर मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस, लंदन से एमआरसीपी और ग्लासगो विश्वविद्यालय से डीसीएच की डिग्री हासिल की। उन्होंने स्विट्जरलैंड, यूके और यूएसए में जेनेटिक ट्रेनिंग प्राप्त की। उन्होंने 1967 में लेक्चरर के रूप में एम्स, दिल्ली ज्वाइन किया और 1988 में बाल चिकित्सा के प्रोफेसर नियुक्त किए गए। उन्होंने जिस जेनेटिक यूनिट की स्थापना की, उसे जेनेटिक्स में डब्ल्यूएचओ कोलेबोरेटिंग सेंटर के रूप में मान्यता मिली जो एशिया में इकलौता था। उन्होंने 1968 में एम्स, दिल्ली में भारत का पहला जेनेटिक सेंटर स्थापित किया जो आनुवंशिक विकारों के लिए पहला केंद्र था, और उन्होंने सबसे पहले स्वदेशी तरीकों का प्रयोग किया और कम लागत पर उन्नत आनुवंशिक जांच सुविधा उपलब्ध कराई। उन्होंने सेवानिवृत्ति के बाद 1997 में एसजीआरएच में अत्याधुनिक आनुवंशिक केंद्र की स्थापना की, जहां से 2018 में वह निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

3. डॉ. वर्मा 20 वर्ष से अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में आदिवासी समुदायों (ऑंगे, एक नीग्रो आदिवासी समुदाय), बस्तर जिले के मुरिया गोंड, उड़ीसा में उदयगिरि के कोंध और केरल के पनिया और दूसरे समुदायों की स्वास्थ्य समस्याओं की जांच-पड़ताल कर रहे हैं। उन्होंने हजारों रोगियों को जेनेटिक काउंसिलिंग दी और जेनेटिक रोग की रोकथाम के लिए प्रसवपूर्व निदान की व्यवस्था की। उन्होंने निदान और नए जीन की खोज के लिए नेक्स्ट जेनरेशन सीक्वेंसिंग तकनीकों का इस्तेमाल किया है। उन्होंने थैलेसीमिया, मंदबुद्धिपन, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी आदि के लिए कई पेशेंट सोसाइटी शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. डॉ. वर्मा ने भारत में जेनेटिक विकारों के भार को साबित किया है, जिससे सेवाओं के नियोजन लिए विश्वसनीय बुनियादी डेटा उपलब्ध हुआ है। वह केरल में मोनाजाइट से लो डोज़ रेडिएशन में डाउन सिंड्रोम की बढ़ी आवृत्ति दिखाने वाले अध्ययन में मुख्य जेनेटिक विज्ञानी थे। उन्होंने 445 शोध पत्र लिखे हैं। वह 1993 से 2018 तक इंडियन जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक्स के प्रधान संपादक रहे हैं, जो भारत में सभी चिकित्सा पत्रिकाओं में सर्वप्रमुख है।

5. डॉ. वर्मा भारत सरकार की कई समितियों के सलाहकार रहे हैं। उन्होंने सरकार की विरल रोग नीति विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह बीस वर्ष तक डब्ल्यूएचओ जिनेवा और सियेरो के सलाहकार रहे हैं। उनके पास NAMS, RCP (लंदन), AAP और APRS (USA) की फेलोशिप है। उन्होंने इंडियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन जेनेटिक, इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स दिल्ली, सोसाइटी ऑफ फेटल मेडिसिन और इंडियन सोसाइटी ऑफ आईईएम के अध्यक्ष के रूप में काम किया है। उन्होंने भारत में आनुवंशिक रोगियों के स्वास्थ्य में सुधार और देश में मेडिकल जेनेटिक सेवाओं के लिए बुनियादी ढांचा स्थापित करने के लिए मेडिकल जेनेटिक्स में चिकित्सकों और वैज्ञानिकों के प्रशिक्षण में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

6. डॉ. वर्मा को कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उन्हें बीसी रॉय-एमसीआई राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उन्हें आईसीएमआर, नाम्स, रैनबैक्सी साइंस फाउंडेशन, गुरु नानक विश्वविद्यालय द्वारा भी पुरस्कार प्रदान किए गए हैं; और एम्स, एनडी, क्लाउड नाइन ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स और साइजिनोम फाउंडेशन की ओर से लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड भी प्राप्त हुआ है।